B.A. II Hindi Hons.

संत साहित्य की पृष्ठभूमि : का शेषभाग

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद।

राजनीतिक पृष्ठभूमि :- संत साहित्य के आविर्भावकालीन स्थितियाँ विशेषकर राजनीतिक स्थितियाँ अत्यंत विषम थी। उस समय तैमूरलंग ने दिल्ली में जो नरसंहार किया था, जैसी लूट मचाई थी वह ~~[illegible]~~ भारतीय इतिहास की दुखतम घटना थी। इस समय दिल्ली का शासन तुगलक, लोदी और सैयद वंशों के हाथ में था। आये दिन राज्य की सीमा विस्तार के लिए युद्ध हुआ करते थे। इसी के साथ तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन का व्यापार भी खूब जोरों से चल रहा था। जन सामान्य राजनीतिक रूप से उदासीन थी किन्तु धर्म पर हो रहे अत्याचार से क्षुब्ध भी थी। राजनीति में पवित्रता का अभाव था तथा येन-केन प्रकारेण राज्य विस्तार को उचित माना जाने लगा था। हिन्दू मंदिरों का विध्वंस मुसलमानों की दृष्टि में धार्मिक श्रेष्ठता ~~[illegible]~~ के लिए उचित कर्म था जबकि हिन्दुओं के लिए मृत्युतुल्य कष्ट से किसी भी प्रकार से कम नहीं था। इसलिए दक्षिण भारत से आये भक्ति आन्दोलन की बागडोर आचार्यों ~~के~~ के हाथों से जनता के सामान्य कवियों के हाथों में आ गयी। हिन्दू और मुसलमानों ~~की~~ के बीच सामाजिक खाई को पाटे जाने के प्रयत्न होने लगे। इसी के साथ समाज में ऊँच-नीच, छूत-अछूत तथा बड़े-छोटे के बीच बढ़ती खाई को भी पाटने का उपक्रम शुरू हुआ।

सामाजिक पृष्ठभूमि :- धर्म और राजनीति का ~~समाज~~ समाज से अटूट सम्बन्ध है। जैसा कि ऊपर में निवेदन किया गया है कि तत्कालीन राजनीति की विकृति का अत्यंत निकृष्ट प्रभाव समाज पर भी पड़ा। एक तरफ मुसलमानों ने लूट के बल पर अकूत संपत्ति इकट्ठा कर उससे ऐश्वर्य और विलास में ~~[illegible]~~ डूबकर भोग किया। उनके साथ ही उनके सहयोगी लोग भी विलास में डूबे रहे। इसका ~~[illegible]~~ प्रभाव समाज पर पड़ रहा था जिसकी अभिव्यक्ति इन कवियों की रचनाओं में

tes

one

ail

ebsite

~~[illegible]~~ प्रमुखता से हुई है। इन कवियों ने अनुभव किया था कि कंचन और कामिनी के लिए ही कुढ़ और सामाजिक एवं वैयक्तिक संघर्ष होते रहते हैं। यही कारण है कि उन्होंने कंचन एवं कामिनी के विरोध में एकमत होकर इस पर प्रहार किया। संतकाव्य के समस्त कवियों ने नारी की प्रबल निन्दा की है। उसे नागिन, डाकिन इत्यादि का नाम दिया है। वैसे ही सम्पत्ति को विपत्ति का कारण माना है। उनके इन कथनों में साधना की उच्चता प्राप्त करने हेतु इनका निषेध आवश्यक ही किया गया है किन्तु सामाजिक परिस्थितियों के कारण भी इनकी अभिव्यक्ति में इनके प्रति निषेध और वर्जना का भाव उभर आया है।

साहित्यिक पृष्ठभूमि:- जिन धार्मिक सम्प्रदायों ने संतकाव्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि तैयार की उन सम्प्रदायों की साहित्यिक प्रवृत्तियों का संत काव्य में स्वतः ~~[illegible]~~ हो गया। वज्रयान सम्प्रदाय का संत साहित्य पर अत्यन्त गहरा प्रभाव पड़ा है। यही कारण है कि वज्रयानी सिद्धों की प्रवृत्तियाँ यहाँ पर सम्पूर्ण रूप से उभर आयी हैं। इन सिद्धों ने जीवन के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया तथा अंधविश्वासों को जड़ से समाप्त करने का भी उपक्रम किया। इन्होंने वैदिक कर्मकांड एवं ब्राह्मणवाद का न केवल विरोध किया वरन् उनका उपहास भी किया। इन सिद्धों का संत काव्य पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनके साहित्य में उनकी समस्त प्रवृत्तियाँ अपनी सम्पूर्णता में उभर आयी हैं। इसलिए कबीर कहते हैं कि यदि पत्थर पूजने से भगवान मिलते हैं तब मैं पहाड़ पूजने के लिए तैयार हूँ। वैसे ही नागा साधुओं पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि यदि नंगा रहने से भगवान मिलें तो अवश्य समस्त वनप्राणियों को ईश्वर साक्षात्कार हो जाना चाहिए था। इसी प्रकार संत कवियों ने नाथ पंथियों के समान जीवन को सहजता से जीने का आग्रह किया। ~~अतः~~ उनका तर्क है कि सहजता वह तत्व है

जिससे जीवन में आर बिना नवी जीवन सार्थक हो सकता है इन ईश्वर की निकटता प्राप्त हो सकती है। ~~इस प्रकार~~ नाथपंथ में योग का बड़ा महत्व है जिसे संत कवियों ने स्वतः अपनाया है। आसन, प्राणायाम, ईड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, चक्र, सहस्रदल इत्यादि शब्दों का प्रयोग कर वे नाथपंथी भावनाओं को ही सीधे अपनाते रहे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संतकाव्य की पृष्ठभूमि में तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा अन्य परिस्थितियाँ सक्रिय थी जिनकी सहज परिणति संतकाव्य है।